

वर्मनि जानवरों की हत्या

प्रलिस के लयि:

वन्यजीव संरक्षण अधनियम, 1972, वर्मनि, वन्यजीव (संरक्षण) संशोधन वधियक, 2021 ।

मेन्स के लयि:

वभिन्न वनस्पतयिों और जीवों के संरक्षण में वन्यजीव संरक्षण अधनियम, 1972 का योगदान । वर्मनि जानवरों की हत्या पारसिथतिकी तंत्र की खाद्य शृंखला के लयि गंभीर खतरा पैदा करती है ।

चर्चा में क्यो?

[वन्यजीव \(संरक्षण\) संशोधन वधियक, 2021](#) को दसिंबर 2021 में [वन्यजीव \(संरक्षण\) अधनियम, 1972](#) में संशोधन करने के लयि संसद में पेश कया गया था ।

- संशोधन का मूल उद्देश्य परसिथतिकी में परविरतन के अनुसार, अधनियम को संरखति करना और **वर्मनि/पीडक जानवरों की हत्या** के उचति समाधान के अनुकरण का परयास करना है ।

वर्मनि:

- **वर्मनि** मूल रूप से **समस्याग्रस्त या हानिकारक जानवर हैं क्योकवे मनुष्यों, फसलों, पशुओं या संपत्तिके लयि खतरा होते हैं ।**
- प्रजातयिों जिन्हें वन्यजीव संरक्षण अधनियम, 1972 की **अनुसूची V** में रखा गया है, उन्हें **वर्मनि** के रूप में वर्गीकृत कया गया है ।
 - **उदाहरण:** कौवे, फल चमगादड़, चूहे जनिका स्वतंत्र रूप से शिकार कया जा सकता है ।
- अधनियम वर्मनि शब्द को परभाषति नहीं करता है । **वन्यजीव संरक्षण अधनियम की धारा 62** केंद्र सरकार को कसिी भी जंगली जानवर को वर्मनि घोषति करने की शक्ति प्रदान करती है ।
- वन्यजीव संरक्षण अधनियम, 1972 की **अनुसूची I और अनुसूची II** में शामिल जंगली जानवरों की प्रजातयिों को वर्मनि घोषति नहीं कया जा सकता है ।
 - एक जानवर को कसिी भी नरिदषिट क्षेत्र और नरिदषिट अवधके लयि वर्मनि के रूप में घोषति कया जा सकता है ।
- मानव-वन्यजीव संघर्षों को रोकने के लयि अतीत में कई राज्यों ने **हाथी, भारतीय साही, बोनट मकाक, लंगूर और भौकने वाले हरिण** सहति वभिन्न जानवरों को **वर्मनि** घोषति करने के लयि याचिका दायर की है ।
- केंद्र ने हिमाचल प्रदेश में **रीसस बंदर, उत्तराखंड में जंगली सूअर और बिहार में नीलगाय को वर्मनि घोषति कया है ।**

वन्यजीव (संरक्षण) अधनियम, 1972:

- वन्यजीव (संरक्षण) अधनियम, 1972 जंगली जानवरों और पौधों की वभिन्न प्रजातयिों के संरक्षण, उनके आवासों के प्रबंधन, साथ ही जंगली जानवरों, पौधों एवं उनसे बने उत्पादों के व्यापार के वनियमन व नरिंतरण के लयि **कानूनी ढाँचा** प्रदान करता है ।
- अधनियम में पौधों और जानवरों की अनुसूचयिों को भी सूचीबद्ध कया गया है जनिकी सरकार द्वारा सुरक्षा व नगिरानी की जाती है ।
- वन्यजीव (संरक्षण) अधनियम, 1972 में वर्तमान में **छह अनुसूचयिों** हैं जो जानवरों और पौधों को **अलग-अलग** सुरक्षा प्रदान करती हैं ।
- **अनुसूची I और अनुसूची II के भाग II** में सूचीबद्ध नसलों एवं वर्ग के जानवरों को सर्वोच्च सुरक्षा मलिती है । उदाहरण के लयि हिमालयन ब्राउन बीयर, भारतीय हाथी, गोल्डन गेकोस, अंडमान टील, हॉर्नबलिस, ब्लैक कोरल, अमारा बरूसी तथा कई अन्य । इनके तहत अपराधों के लयि उच्चतम दंड नरिधारति कया गया है ।
- **अनुसूची III और अनुसूची IV** में सूचीबद्ध नसलों और वर्ग के जानवर भी सुरक्षति हैं, उदाहरण के लयि बार्कगि हरिण, बाज़, कगिफशिर, कछुआ आदि, लेकनि दंड तुलनात्मक रूप से बहुत कम है ।
- **अनुसूची V** में वे जानवर शामिल हैं जनिका शिकार कया जा सकता है । उदाहरण के लयि कौआ, चूहे और मूषक, फल चमगादड़ आदि ।
- **अनुसूची VI** में वर्णति पौधों, पेड़ों और फसलों की खेती एवं रोपण से प्रतबिधति कर दया गया है । उदाहरण के लयि कूठ, रेड वांडा, पचिर प्लांट आदि ।

वन्यजीव (संरक्षण) संशोधन वधियक, 2021 के माध्यम से संभावति परिवर्तन:

- वन्यजीव (संरक्षण) संशोधन वधियक, 2021 एक महत्त्वपूर्ण संशोधन के रूप में अनुसूचियों की संख्या को छह से घटाकर चार कर दिया गया है।
 - अनुसूची I में उन प्रजातियों को शामिल किया जाएगा जिनमें उच्चतम स्तर के संरक्षण की आवश्यकता है।
- अनुसूची II में उन प्रजातियों को शामिल किया जाएगा जिनमें कम संरक्षण की आवश्यकता है।
- जबकि अनुसूची III में पौधों को शामिल किया जाएगा।
- यह अनुसूची V को पूरी तरह से समाप्त करने का प्रावधान करता है। यह वर्मनि प्रजातियों को किसी भी प्रकार की अनुसूची से बाहर करता है। वर्मनि शब्द उन छोटे जानवरों को संदर्भित करता है जो बीमारियों का प्रसार और खाद्य पदार्थों को दूषित/हानि पहुँचाते हैं।
- यह CITES (अनुसूचित प्रजातियों) के तहत परशिषिटों में सूचीबद्ध प्रजातियों के लिये एक नए कार्यक्रम को शामिल करता है।
- केंद्र सरकार को किसी भी प्रजाति को वर्मनि प्रजाति के रूप में घोषित करने का अधिकार होगा।
- इस प्रकार किसी भी प्रजाति को वर्मनि प्रजाति की श्रेणी में रखना आसान हो जाता है।
- यह परिवर्तन संभावति रूप से सतनधारियों की 41 प्रजातियों, 864 पक्षियों, 17 सरीसृपों और उभयचरों एवं 58 से अधिक कीड़ों की प्रजातियों को प्रभावित कर सकता है।

वन्यजीव (संरक्षण) संशोधन वधियक, 2021 की आवश्यकता:

- बढ़ते मानव-वन्यजीव संघर्ष ने जानवरों और मनुष्यों दोनों के लिये खतरा पैदा कर दिया है।
 - फसल/पशुधन क्षति के रूप में ऐसी घटनाएँ देश के विभिन्न भागों से व्यापक रूप से रिपोर्ट की जाती हैं।
 - हिमाचल प्रदेश के कृषि विभाग द्वारा वर्ष 2016 में जंगली जानवरों, विशेष रूप से बंदरों के कारण 184.28 करोड़ रुपए की फसल की हानि दर्ज की गई।
- वर्ष 2017 के बाद से तमलिनाडु में जंगली जानवरों द्वारा कृषि को नुकसान पहुँचाने की 7,562 घटनाएँ दर्ज की गई हैं।

कीट और पारस्थितिक असंतुलन का इतिहास:

- वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 में उल्लिखित जेनेसिस वर्मनि की श्रेणी औपनिवेशिक काल की है जो न्यूनतम वैज्ञानिक आधारों पर वर्गीकृत है।
 - ट्यूंडर वर्मनि अधिनियम अवांछनीय जानवरों और कृषि को हानि पहुँचाने वाले कीटों को समाप्त करने का प्रावधान करता है।
- अनाज संरक्षण अधिनियम, 1952, वर्मनि अधिनियमों में से एक था जिसमें वर्मनि की श्रेणी में शामिल प्रजातियों की एक आधिकारिक सूची जारी की गई।
 - उल्लू, ऊदबलिव, लोमड़ी, हेजहॉग और अन्य संबंधित जानवरों को मनुष्यों के साथ भोजन के प्रतद्विंदी के रूप में माना जाता है।
- वर्तमान प्रोत्साहन प्रदान कर भारत सरकार ने एक व्यापक वर्मनि आबादी को समाप्त करने की अनुमति दे दी है।
 - उदाहरण के लिये हिमाचल प्रदेश सरकार ने प्रत्येक वर्मनि बंदर को मारने पर 500-700 रुपए देने की घोषणा की है।
- सरकार के इस रवैये से गंभीर पारस्थितिक असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।
- बड़े पैमाने पर वर्मनि जानवरों को मारे जाने से कषेत्र की खाद्य शृंखला में शून्यता/नरिवात की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है।
- मानव-वन्यजीव संघर्ष को नयित्तरि करने के घातक तरीके लक्षित प्रजातियों को तो खतरे में डालते ही हैं साथ ही अक्सर गैर-लक्षित जानवरों के लिये भी घातक सदिध होते हैं।
 - वर्ष 2016 में कृषि को हुए नुकसान के कारण कर्नाटक सरकार द्वारा जंगली सूअर की हत्या को वैध किये जाने के बाद कर्नाटक के नागरहोल राष्ट्रीय उद्यान में घोंघे की संख्या में वृद्धि हुई।
 - जंगली सूअरों को पकड़ने के लिये लगाए गए जालों में बाघ, तेंदुआ और भालू (सभी अनुसूची I जानवर) जैसी प्रजातियाँ भी फँस गई थीं।
- हिमाचल प्रदेश सरकार ने वर्ष 2020 के बाद से अब तक रीसस मकाक को चार बार वर्मनि घोषित किया है जिसके परिणामस्वरूप इसकी आबादी में अंततः 33.5% की कमी आई है।
- मानव-वन्यजीव संघर्ष परबंधन के गैर-घातक तरीकों को घातक तरीकों की तुलना में अधिक प्रभावी बताया गया है।
- इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि सामूहिक हत्या वास्तविक समस्या को संबोधित नहीं करती है।

मानव-वन्यजीव संघर्षों में वृद्धि का कारण:

- मानव-वन्यजीव संघर्षों में वृद्धि का मुख्य कारण आवास क्षति और अतिक्रमण है।
- विकास परियोजनाओं, औद्योगीकरण और कृषि विस्तार ने वन कषेत्र को काफी कम कर दिया है।
- इससे अंततः जंगली जानवर कृषि बस्तियों के निकट आने को विविश हुए जिससे मानव-वन्यजीव संघर्ष की समस्याएँ उत्पन्न हुईं।

आगे की राह

- मानव-वन्यजीव संघर्षों को कम करने के लिये किसी जानवर को 'वर्मनि' घोषित करना न तो स्थायी और न ही प्रभावी समाधान है।
- नतीजतन, फसल क्षति की मात्रा पर एक डेटाबेस बनाए रखने और संघर्ष पैटर्न का वैज्ञानिक सर्वेक्षण करने तथा समस्या पैदा करने वाले जानवरों की गणना किये जाने की तत्काल आवश्यकता है।
- डेटा के बिना लिये गए अवैज्ञानिक और अचानक नरिण्यों से पारस्थितिकी तंत्र एवं जैवविविधता पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ेगा।

स्रोत: डाउन टू अर्थ

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/culling-of-vermin>

